L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - II
B.A. PAPER - 0III
PSYCHOLOGY (Honours)
PSYCHOPATHOLOGY.
TOPIC - Basic Tenets of Existential psychology.

Dr. Pramod Kumar Sahu
Assistant - Professor.
Guest, Teacher.
V.S.J. College Rajnagar.
pramodkumarsahu2018
@gmail.com.
MADHUBANI (BIHAR).

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान व्यवहारवादी मनोविज्ञान द्वारा प्रतिपादित उस विचारधारा का विरोध करता है, जिसमें मानव प्रकृति को समझने के लिए पशुओं के प्रयोगों पर अधिक बल डाला गया था, अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनुष्यों की प्रकृति को समझने के लिए एक नया दृष्टिकोण (new look) अपनाया गया. इन लोगों का मत था, कि आधुनिक समय में मनोविज्ञान मानव प्रकृति (human nature) की सम्पूर्णता (totality) को सही - सही ढंग से समझने में विफल रहा है। अतः इसे समझने की विशेष कोशिश करनी चाहिए। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में कुछ ऐसे ही बातों पर जोर डाला गया है जिसके द्वारा मानव प्रकृति की वास्तविकता तथा सम्पूर्णता एवं जिसमें व्यक्ति का वास्तविक अस्तित्व होता है को समझा जाए। इससे सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण विचार की स्पष्ट निम्नांकित है।

(1) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का उद्देश्य मनुष्य को एक ठोस - व्यक्ति के रूप में अध्ययन करना होता है जो संसार में एक जीवित प्राणी के रूप में अपना अस्तित्व बनाये रखने में सक्षम होता है।

(11) प्रत्येक व्यक्ति की आन्तरिक जिन्दगी अनोखी होती है। जिसमें भिन्न - भिन्न तरह के अनुभव होते हैं तथा बाह्य वातावरण के प्रभावों की भिन्न - भिन्न अनुभूतियाँ भी होती हैं। व्यक्ति की आन्तरिक जिन्दगी अनोखी ही नहीं होती है, बल्कि एक जीवित अनोखा प्राणी के रूप में अन्य सभी जातियों के प्राणि से प्राणि के रूप में भिन्न होता है। मनुष्य एक विशेष प्राणी है।

जिससे कि विशिष्टताएँ पशुओं की विशेषताओं से भिन्न ही नहीं बल्कि काफी श्रेष्ठ होती है।

(iii) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का उद्देश्य व्यक्ति को उसकी सम्पूर्ण अस्तित्ववादी वास्तविकता के सन्दर्भ में समझना है। यह प्रत्येक व्यक्ति की समस्याओं को उसकी अस्तित्ववादी वास्तविकता के सन्दर्भ में अध्ययन करता है न कि उसके बारे में एक औसत सामान्यीकरण करता है।

(iv) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यक्ति के चेतन, भाव, मनोदशा तथा उसके वैयक्तिक अनुभूति जैसे कि वे उसके अस्तित्ववादी प्रक्रिया जिस में व्यक्ति लीन होते हैं, से होती है।

(v) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में कुछ ऐसे विषयों पर बल डाला जाता है जिसे अस्तित्ववादी दर्शनशास्त्र से लिया गया है। ऐसे विषयों के प्रमुख विषयों में आदमी आदमी की स्वतन्त्रता, मानवीय मूल्यों, जिन्दगी का अर्थ, चिन्ता, दुःख, मृत्यु आदि प्रधान है।

(vi) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का सबसे प्रमुख कार्यक्षेत्र, व्यवहार, मनोचिकित्सा (Psychotherapy) तथा परामर्श (concelling) रहा है।

(vii) अस्तित्ववादी मनोविज्ञान बाह्य नियतिवाद (externeel determinism) के प्रति अस्वीकृत करता है, इस मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए स्वयं जवाबदेह होता है। वह अपने अस्तित्ववादी क्रियाओं का मालिक स्वयं होता है। उस पर कोई बाह्य वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है। वह स्वयं अपने ही यह निर्णय करता है कि वह क्या करेगा या क्या नहीं करेगा।

(viii) मानवतावादी मनोविज्ञान के समान अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का स्वरूप प्रतीगात्मक (externeel determinism) के प्रति अस्वीकृत करती है, इस मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए स्वयं जवाबदेह होता है। वह अपने अस्तित्ववादी क्रियाओं का मालिक स्वयं होता है।

Scanned with CamScanner

अब यह ठीक बाह्य वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है वह व्यक्ति अपने ही यह निर्णय करता है कि वह क्या करेगा, या क्या नहीं करेगा,

(viii) मानवतावादी मनोविज्ञान के समान अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का स्वरूप प्रयोगात्मक (experimental) नहीं होता है। इसके विश्लेषण की विधि घटना-क्रिया प्रधान (Phenomenological) होता है। जिसके चेतन के स्वरूप, अनुभूतियाँ तथा आत्मनिष्ठ वास्तविकता (subjective reality) का विश्लेषण पर अधिक जोर दिया जाता है। इस विधि में उन घटनाओं का वर्णन किया जाता है। जिसे व्यक्ति अनुभव करता है या कल्पना करता है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में भी घटना क्रम अनुभूति विश्लेषण (Phenomenological analysis) होता है। इसके तीन मुख्य पक्ष है

(i) अन्तर्बोध (Intuition) इसमें व्यक्ति अपने चेतन अनुभूतियों पर ध्यान केन्द्रित करता है।

(ii) विश्लेषण - (Analyzing) इसमें चेतन अनुभूतियों के विभिन्न पहलुओं की पहचान किया जाता है। तथा उनके सम्बन्ध पर प्रकाश डाला जाता है

(iii) वर्णन करना - (Describing) इसमें व्यक्ति अपने चेतन अनुभूतियों को एक लिखित भाषा में व्यक्त करता है। जिसे अन्य लोग समझ सके -

स्पष्ट हुआ कि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के सिद्धान्त बहुत कुछ ऐसे है जो मानवतावादी मनोविज्ञान के मूल तत्वों से काफी मिलते-जुलते है

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय अस्तित्ववादी मनोविज्ञान

मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक तरह आन्दोलन (movement) था न कि कोई विशेष सम्प्रदाय (system) हालांकि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का विकास यूरोप में हुआ परन्तु तुरन्त ही यह अमेरिका में फैल गया, यह मनोविज्ञान व्यवहारवाद का विरोध करता है इस मनोविज्ञान का मत है कि व्यवहारवाद ने मनुष्यों को एक मशीन के रूप में [illegible] है जो बराबर चलता है

(IV)

मनुष्य के व्यवहार अनुबंधित प्रतिवर्त की एक शृंखला नहीं होती है। जैसे कि व्यवहारवाद ने बताया था। अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों का यह मत है कि व्यक्ति की मौलिक प्रकृति मानवीय (human) होता है। जिसे मशीन से तुलना नहीं किया जा सकता है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को जोर देता है कि वह अपने अस्तित्ववादी वास्तविकता (existential reality) में होता है का अध्ययन करता है और इस प्रकार से अस्तित्ववादी मनोविज्ञान मानवतावादी मनोविज्ञान (humanistic psychology) के करीब आ जाता है। शायद यही कारण है कि मनोविज्ञान के तृतीय बल (third force) में मानवतावादी मनोविज्ञान के साथ - ही साथ - अस्तित्ववादी मनोविज्ञान को सम्मिलित किया जाता है। अन्य अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों के समान बॉस (Boss) ने अस्तित्व की स्वतंत्रता को अधिक महत्वपूर्ण माना है तथा नियतिवाद को अस्वीकृत कर दिया है। उनका मत था कि व्यक्ति प्रामाणिक और अप्रामाणिक अस्तित्व में से किसी एक के चुनने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र होता है। अतः दोनों के बीच चुनाव करने के लिए उसे अपनी अस्तित्व, सम्भावनाओं की पूर्ण पहचान होनी चाहिए।

Dr. Pramod Kumar Saha.
Date - 10/09/2020.
Sub - Psychology.